शेखचिल्ली

रचनाकार –राधाकृष्ण

Templete-I

क्या आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप सोचते सोचते अपने ख्यालो में इतना दूर निकल आते है कि आप यही भूल जाते है कि अपने क्या सोचना शुरू किया था |

और .....धीरे-धीरे हम ख्याली पुलाव पकाना शुरू करते है

और.....कुछ नहीं करते बस .....सोचते ही रह जाते है .....इसे कहते है दिवा स्वप्न या Day dreaming इस प्रकार की अवस्था काफी खतरनाक होती है क्योंकी इस प्रकार कि सोच का कुछ भी परिणाम नहीं होता है..... हम कृति करते ही नहीं |

सोचो,अगर कोई सरकार इसी प्रकार योजनाओ का ख्याली पुलाव पकती रहे और वास्तव में कुछ न करे .....तो उस देश का अल्लाह मालिक!!!

आप अभी जो पाठ पढनेवाले है वह एक व्यंग्य कहानी है | इस काल्पनिक कथा के द्वारा लेखक ने तथाकथित समाजसेवी संस्थाओं की तथा जनता को लुभाने वाली पर जमीन पर न उतरने वाली सरकार कि अधिकांश योजनाओ पर क़रार व्यंग्य कसा है |

इस व्यंग्य का आधार है प्रसिद्ध व्यंग्य चरित्र शेखचिल्ली तो आएँ पहले इस व्यंग्य चरित्र के बारे में थोड़ी जानकारी ले.....

Templet-II

शेखचिल्ली बच्चो का पसंदीदा चरित्र है जो अपनी नासमझी के कारण बड़ी-बड़ी गलतीयाँ कर देते है | दिवा स्वप्न देखने में माहिर यह शख्स(व्यक्ति)हमेशा लोगों की हँसी का कारण बना |जैसे जिस डालपर बैठे थे वही डाल काटना और कितने सारे किस्से |

प्रस्तुत कहानी में इसी चरित्र का व्यंग्यात्मक रूप में प्रयोग किया गया है |

Templet-III

व्यंग्य अर्थात ऐसी निंदा जिसमे हँसी कि झलक होती है,वह हमे सोचने पर मजबूर करती है|

प्रस्तुत पाठ ‘वह’ के माध्यम से हमारे सामने आता है|

Templet-IV

पाठ कि शुरुवात में 'वह ' शेखचिल्ली को देखता है | लेखक ने यहाँ जान बुझाकर और सोच समझकर सर्वनामों का उपयोग किया है क्योंकि लेखक 'उसके ' द्वरा सभी सामान्य लोगो को प्रतिनिधिक स्वरूप में दिखाना चाहता है |

'वह ' सामान्य आदमी का प्रतिक है जो सरकार की हर योजनाओ के बारे में काफी उत्सुक रहता उसके मन में प्रश्न होते है और मन में उमंग होती है कि अबकी बार सरकार कि यह योजना जरुर सफल होगी हमें फायदा होगा पर बाद मे उसे पता चलता है कि यह सारे मात्र ख्याली पुलाव है |

यही 'वह ' शेखचिल्ली से प्रश्न पूछता है कि कहाँ जा रहे हो ? तथा बाद में पूछता है कि शेखचिल्ली के ख्याली घोड़े दौड़ने लगते है |शेखचिल्ली के पास बीस पैसो का एक अंडा है |उसी को लेकर उसके सपनो की मलिका शुरू होती है |

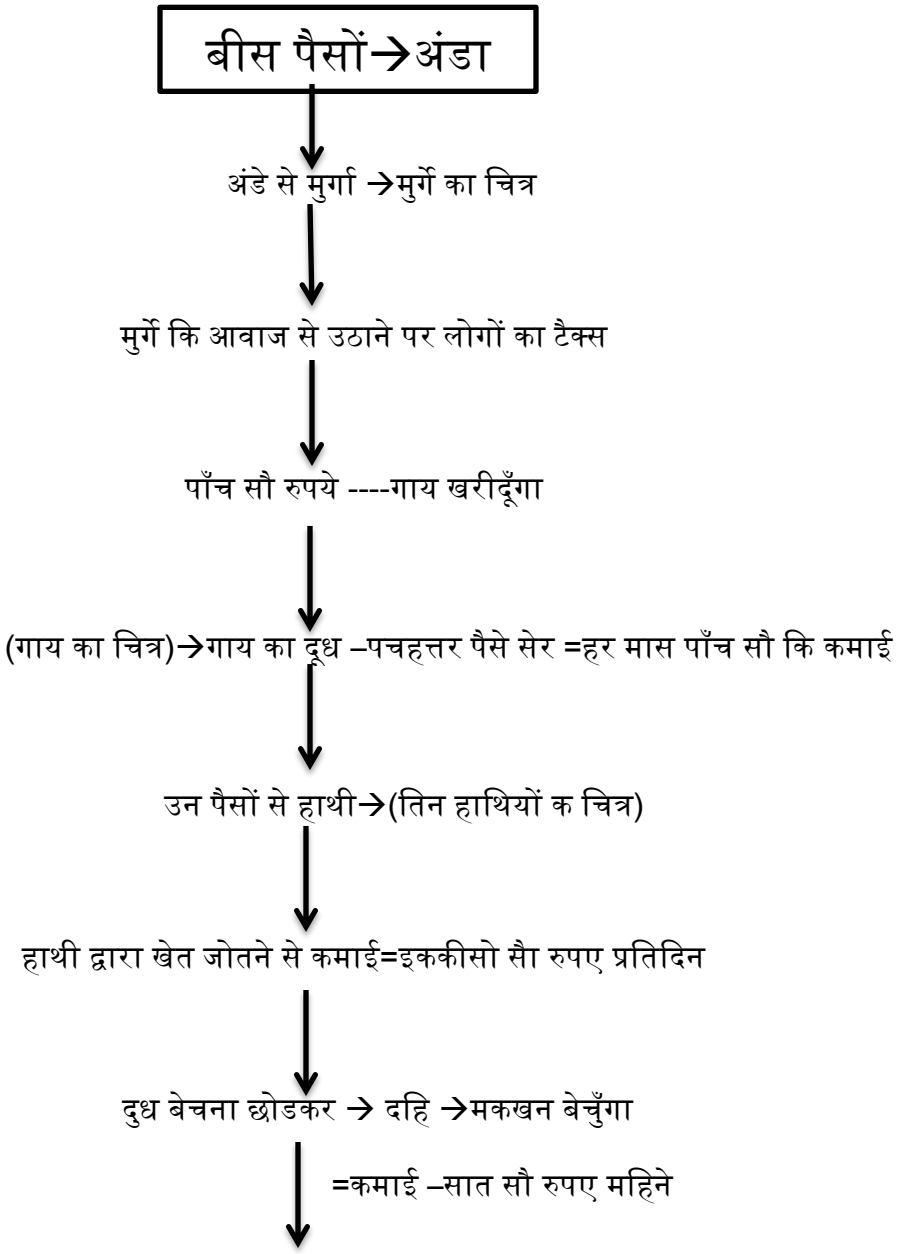

↓

मुर्गे- मुर्गीयॉ बेचने से कमाई

↓

(मिनार का चित्र) शहर के बीचो-बीच २६ हजार फुट ऊँची मिनार

↓

तेनसिह हिमालय पर-शेखचिल्ली मिनार पर बैठकर हाथ मिलाऐगे

↓

अभिनंदन करने आए लोगों कों शेखचिल्ली ढकेल देगा

इस सपने का अंत शेखचिल्ली के गिराने से होता है|और 'वह ' उनपर व्यंग्य करते हुए कहता कि शेखचिल्ली को भारत सरकार में योजना का काम करना चाहिए |

Template :

उददेश्य→

हमारा देश लोकतांत्रिक देश है और ऐसे देश में सरकार का काफी महत्व होता है-पर जब सरकार सिर्फ कागज पर योजनाएँ बनती है तब जनता का बौखला जाना स्वभाविक है---यह पाठ इसी बात का साबुत है|

कहते है योजकस्तत्र दुर्लभ :क्योंकि योजनाओ के साथ उन्हें निभाना भी पड़ता है | भारत सरकार कि योजनाओ का सफल न होना हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम योग्य लोगों को चुनते है | हमें नागरिको का कर्तव्य निभाना होगा तभी ये योजनाऐ सफ़ल हो सकति है |

Template-V

मुल्यांकन:

१)शेखचिल्ली के पास कितने पैसे थे ?

अ)बीस पैसे

ब)दस पैसे

क)तीस पैसे

ड)पचास पैसे

२)शेखचिल्ली किससे हाथ मिलाना चाहता था ?

अ)मान सिंह

ब)तेज सिंह

क)तेनसिंह

ड)राजपाल

३)लेखक ने शेखचिल्ली कि तुलना किससे कि ?क्यों ?

४)भारत सरकार की पंचवार्षिक योजना के विषय में जानकारी प्राप्त करे |

Template-VI

शिक्षको से →

शिक्षक छात्रों को चार गुट में बाँटे तथा हर सप्ताह एक गुट की कक्षा में योजना बनाकर उनका पालन करवाए तथा फिर सभी कक्षा के सामने अपने अनुभवों का कथन करें |